Sub- Philosophy B.A. (Hon's) III Paper - V

Ques- अशुभ या बुराई की समस्या (Problems of Evil) क्या है, इसका (Freedom of will संकल्प की स्वतंत्रता) एवं प्रबल विश्वास द्वारा अशुभ से निदान किया जा सकता है।

or/अथवा

अशुभ एवं पाप की समस्या का विवेचन करें?

or

ईसाई मत के अनुसार, अशुभ की समस्या के स्वरूप एवं महत्व की व्याख्या करें?

or/अथवा

अशुभ की समस्या का समाधान एक ईश्वर मीमांसक कैसे करता है। क्या आप उसके मत से सहमत हैं। अपना तर्क दें।

Ans - अशुभ का अर्थ है शुभ का अभाव। विश्व में अशुभ है अथवा बुराई है, इस तथ्य से कोई अस्वीकार नहीं कर सकता है। हम साधारण अनुभव से संसार में बाढ़, भूकंप, आँधी तूफान, रोग, छल, पाखण्ड, चोरी, डकैती, हत्या धोखा जैसे अशुभ का सामना करते हैं।

मैक्टागर्ट ने अशुभ का समर्थन करते हुए कहा है कि "विश्व में कुछ अशुभ तत्व है- यह एक निर्विवाद सत्य है।"

टेनिसन तथा ह्यूम ने भी प्रकृति को क्रूर माना है तथा इसके दाँत और नाखून को रक्त रंजित कहा है। यह अशुभ इस प्रकार संसार में है यह सिद्ध हो जाता है।

अब प्रश्न यह उठता है कि अशुभ या बुराई की समस्या क्या है और यह समस्या किसके समक्ष उत्पन्न होती है। अशुभ की समस्या वास्तव में अशुभ की व्याख्या की समस्या है जो धार्मिकों अथवा ईश्वर की सत्ता मानने वालों के समक्ष उत्पन्न होती है। नास्तिकों के समक्ष यह समस्या उत्पन्न नहीं होती है। वास्तव में यह समस्या परम सत्ता के रूप में एक ईश्वर मानने वालों के समक्ष उत्पन्न होती है। अनेकेश्वरवादी धर्मों तथा जैसे धर्म जो आस्तिक जीवन जीतो को परम सत्य या संसार में कारण रूप में उपस्थित मानते हैं, कि समक्ष

Scanned with CamScanner

अशुभ की समस्या नहीं उत्पन्न होती है।

प्राणवाद, टोटमवाद, फीटिशवाद आदि धार्मिक विचार विश्व में अनेक जीवों की सत्ता मानते थे। इसमें कुछ जीव अच्छे तो कुछ जीव बुरे होते थे, ऐसी इनकी मान्यता थी। बुरे जीव बुराई या अशुभ का प्रतिनिधित्व करते थे। अनेकेश्वरवादी भी कुछ देवों को अशुभ मानते हैं, और अशुभ की व्याख्या करने में सफल हो जाते हैं।

अशुभ की समस्या की व्याख्या वास्तव में एकेश्वरवादियों के समक्ष उत्पन्न होता है। ईसाई और इस्लाम तथा बहुत हद तक हिन्दू धर्म भी इस समस्या से प्रभावित है। यहाँ इस रूप से अशुभ की व्याख्या का प्रश्न ईसाई और इस्लाम धर्म के सन्दर्भ में ही उठाया जा रहा है कारण अशुभ की समस्या के समाधान में इन्हें ही कठिनाई होती है, तथा विद्वानों के बीच तर्क वितर्क भी इस बात पर ईसाई धर्म एवं इस्लाम धर्म तथा पारसी धर्म के सन्दर्भ में ही होता है।

पश्चमी विद्वानों के बीच इस संबंध में काफी वाद-विवाद होता रहा है।

अशुभ की समस्या ईश्वर की सत्ता को ही चुनौती देती है। ~~वास्तविक~~ नास्तिक यह प्रश्न उठता है कि ईश्वर एक पूर्ण, सर्वव्यापी, सर्वशक्तिमान एवं दयालु सत्ता है अर्थात पूर्णतः शुभ है, तो उसके बनाए हुए संसार में अशुभ क्यों है? यदि ईश्वर पूर्ण है, तो उसके बनाये संसार में अशुभ या अपूर्णता क्यों है? फिर यह भी कहा जाता है कि ईश्वर के गुणों में विरोधा-भास है। यदि ईश्वर सर्वशक्तिमान और दयालु है तो अपने से कमजोर अशुभ को समाप्त क्यों नहीं करता है। अतः यदि सर्वशक्तिमान होकर भी

अशुभ को समाप्त जान बूझकर नहीं करता तो वह दयालु नहीं है। यदि वह दयालु है, परन्तु अशुभ को समाप्त नहीं कर पा रहा है, तो वह सर्वशक्तिमान नहीं है। अतः उसके दोनों गुणों (सर्वशक्तिमान और दयालु) में विरोधाभास है या तो ईश्वर सर्वशक्तिमान नहीं है या फिर दयालु नहीं है।

यही अशुभ की मूल समस्या है। अब चूंकि अशुभ की समस्या ईश्वर के गुणों में विरोधाभास इंगित कर ईश्वर की सत्ता को चुनौती देते हैं, तथा ईश्वर की असत्ता सिद्धि में एक प्रमुख तर्क बन जाती है, तो ईश्वरवादियों एवं धार्मिकों के समक्ष इसके समाधान का क्या उपाय है।

ईश्वरवादी अशुभ की समस्या का समाधान हेतु यह तर्क देते हैं कि एक सत्ता शैतान है जो शक्तिशाली है, वही अशुभ का कारण है। परन्तु नास्तिक यह प्रश्न उठाते हैं कि ईश्वर सर्वशक्तिमान होने के कारण शैतान का अंत क्यों नहीं करता है। यदि नहीं कर पाता है, तो वह सर्वशक्तिमान नहीं है। अतः यह तर्क भी ईश्वरवादियों के अथवा धार्मिकों के ईश्वर को बचा नहीं पाता है।

पुनः ईश्वरवादी इस समस्या के समाधान के लिए संकल्प की स्वतन्त्रता (Freedom of will) नामक सिद्धान्त की शरणागता लेते हैं। ईश्वर ने मनुष्य को संकल्प या इच्छा की स्वतन्त्रता प्रदान की है। वह अपनी इच्छा से बुरे कर्म करता है और जगत में बुराई उत्पन्न कर देता है।

इसी इच्छा की या संकल्प की स्वतंत्रता के ईसाई धर्मावलंबियों के विचार से पाप की समस्या का भी संबंध है। ईसाई धर्म का वास्तविक पाप या मौलिक पाप का विचार है। एडम और ईव (आदम और हौवा) को ईश्वर ने स्वर्ग में रखा था और उन्हें इच्छा या संकल्प की स्वतन्त्रता

दी थी परन्तु इबलीस अथवा शैतान की बात मानकर ईश्वर
द्वारा निषिद्ध फल अपनी इच्छा से खाये। उसी समय
से दोनों मौलिक पाप के भागीदार बने। उन्हें ईश्वर ने
स्वर्ग से निकाल कर पृथ्वी पर फेंका चूँकि सारी मानव
जाति उन्हीं दोनों की सन्तान है, अतः सारी मानव जाति
मौलिक पाप के भागीदार है, क्योंकि वे इसी पाप के
परिणाम स्वरूप उत्पन्न हुए हैं। चूँकि मनुष्य के पूर्वज आदम
और ईव अपनी इच्छा अथवा संकल्प से इबलीस
अथवा शैतान की बात मान कर मूल पाप किया और
पूरी मानव जाति को पापी बनाया अतः अशुभ के लिए
भी वही जिम्मेवार है। ईश्वर ने तो उसे स्वर्ग में रखा था
परन्तु अपनी इच्छा से वह मौलिक पाप कर अशुभ
से युक्त जगत में पड़ा है। यही ईसाई धर्म में पाप
का संप्रत्यय है जो एक प्रकार से जगत में अशुभ की
समस्या का समाधान भी देता है।

समाधान के विपक्ष में तर्क :— नास्तिकों की
ओर से यह प्रश्न उठाया सकता है कि आदम और ईव के
कुकर्मों की सजा ईश्वर समस्त मानव जाति को क्यों
दिया। फिर ईश्वर ने आदम तथा ईव को मानसिक तथा
नैतिक रूप से इतना सबल क्यों नहीं बनाया कि वह इबलीस
की बातों की अवमानना कर दे। इसका उत्तर धार्मिकों के पास
नहीं है। वे ईश्वर को दयालु बताते हुए वे कहते हैं कि
"परमेश्वर ने प्रभु ईशु को 'मौलिक पाप' से मानव जाति
को मुक्त करने के लिए पृथ्वी पर भेजा। प्रभु ईशु ने
पृथ्वी पर अपना बलिदान देकर समस्त मानव जाति को
पाप मुक्त कर दिया।

परन्तु यहाँ प्रश्न उठता है कि जब समस्त
मानव जाति, प्रभु ईशु के बलिदान से पाप मुक्त हो चुकि

है, तो अभी भी संसार में अशुभ क्यों है। नैतिक अशुभ, चोरी डकैती आदि की समस्या का समाधान तो संकल्प की स्वतन्त्रता, जैसे सिद्धान्त से हो जाती है, परन्तु भौतिक अशुभ जैसे - बाढ़, भूकम्प आदि का समाधान किसी प्रकार भी नहीं हो पाता है। इसमें ईश्वर भक्त अच्छे बुरे सभी कष्ट भोगते हैं।

अशुभ की समस्या का समाधान - इस प्रकार अशुभ की समस्या धर्म दर्शन में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है। हमारी तर्क बुद्धि की सहायता से ईश्वरवादियों अथवा धार्मिक द्वारा ईश्वर की सिद्धि के लिए दिये गये तर्कों का खण्डन करती है तथा यह भी स्पष्ट कर देती है कि ईश्वर की सत्ता को तर्क से न तो प्रमाणित किया जा सकता है नहीं इसे अप्रमाणित किया जा सकता है। यह श्रद्धा एवं आस्था से स्वीकारा जा सकता है।

निष्कर्षतः हम कह सकते है कि अशुभ की समस्या का धर्म दर्शन में व्यापक महत्व है, इसी के आधार पर ईश्वर की सत्ता के लिए दिये गये तर्कों का खंडन संभव है। अंत में अशुभ की समस्या का समाधान किसी प्रकार भी धार्मिक होने मे असफल प्रतीत होते हैं।

Dr. Saroj Ram
Dept. of Philosophy
D.K. College, Dumraon
V.K.S.U. Ara

Scanned with CamScanner